

पाकिस्तानी राजसत्ता का आतंकवादी चरित्र

प्रभात कुमार राय

पाकिस्तान का नाम समूची दुनिया में जेहादी आतंकवाद के लेकर वस्तुतः पहले से ही काफी बेहद बदनाम रहा। अब तो पाकिस्तान के एबटाबाद शहर में मिलिट्री अकादमी के निकट सीआईए द्वारा ओसामा बिन लादेन की हलाकत ने उसके सबसे ज्यादा खैरख्वाह अमेरिका की नजरों में भी गिरा दिया है। अमेरिकी सीनेटर टेड पोई ने हाऊस ऑफ रिप्रजेंटेटिव में पंद्रह हजार करोड़ की फौरी इमदाद को रोक देने का प्रस्ताव पेश किया। इस प्रस्ताव को अमेरिका के सांसदों का समर्थन हासिल हो रहा है। जेहादी आतंकवाद को लेकर बरसों से अमेरिका दरअसल पाकिस्तान के डबल गेम को इसलिए बर्दाश्त कर रहा है, क्योंकि अफगानिस्तान के मोर्चे पर रणनीतिक तौर से पाकिस्तान की उसे बेहद दरकार रही है। एक और भयानक खतरा विश्व के समक्ष विद्यमान है कि पाकिस्तान को उसके हाल पर छोड़ देने का नतीजा हो सकता है कि परमाणु बमों से लैस पाकिस्तानी राजसत्ता को जेहादी आतंकवादी पूरी तरह हथिया ले, जैसा कि इतिहास के एक दौर में मुल्ला उमर की क़यादत में जेहादी तत्व अफ़गानिस्तान की राजशक्ति पर कब्जा कर चुके थे।

यही सब कारण रहे हैं कि अमेरिका सदैव पाक हुक्मरानों की नाकाबिले बर्दाश्त ब्लैकमेलिंग में फंसा हुआ है। अमेरिका के रणनीतिज्ञों का स्पष्ट नज़रिया है कि अफ़गानिस्तान के मुकाबले पाकिस्तान पर जेहादी तत्वों का नियंत्रण वस्तुतः उसके लिए बेहद भयावह साबित होगा। अमेरिका ऐतिहासिक तौर पर अफ़गानिस्तान के मामले में अंजाम दी गई गलती को कदाचित दोहराना नहीं चाहता, जबकि अमेरिका ने अफगानिस्तान में कम्युनिस्टों की पराजय के तत्पश्चात उसे पूर्णतः पाकिस्तान के भरोसे छोड़ दिया था। अमेरिका द्वारा अफगानिस्तान की उपेक्षा का परिणाम हुआ कि अफ़गान-सोवियत युद्ध के अहमदशाह मसूद और गुलबदीन हिकमतयार जैसे उदारवादी नायकों को खत्म करके पाकिस्तान ने अपनी फौजी ताकत के दमखम पर कट्टरपंथी तालीबानी ताकतों को सत्तानशीन करा दिया था। तालीबानी तत्वों ने ओसामा बिन लादेन की तंजीम अलकायदा को खुलकर खेलने का मौका फ़राहम कराया।

अमेरिका के नीतिकारों ने जेहादी आतंकवादी तत्वों की विध्वंसकारी ताकत को कदाचित तब तक नहीं पहचाना, जब तक जेहादियों ने अमेरिका को ही खूनी निशाना नहीं बना लिया। वर्ल्ड ट्रेड टावर के विध्वंस के बाद अमेरिका का नज़रिया परिवर्तित हो गया। वरन् पाकिस्तान की सरपरस्ती में 1988 से कश्मीर में शुरू हुई जेहादी जंग को अमेरिकन नीतिकार कश्मीरी आजादी की जंग निरूपित

करते रहे। विगत 23 वर्षों के दौरान कथित जेहादियों ने जितने जख्म भारत को दिए हैं, उतने अधिक जख्म दुनिया के किसी भी मुल्क को नहीं दिए। कश्मीर और शेष भारत में जेहादी आतंकवादियों ने एक लाख से अधिक भारतवासियों को हलाक किया। अमेरिका ने पाकिस्तान को जितनी विशाल वित्तीय सहायता प्रदान की उसका अधिकतर इस्तेमाल भारत को तबाह करने के लिए किया गया।

पाकिस्तानी राजसत्ता का वास्तविक चरित्र अपने स्थापना काल से ही सामंती बर्बरता से परिपूर्ण रहा, जबकि 1947 में ही मेजर जरनल अकबर खान की कमान में पाक फौज ने कश्मीर पर आक्रमण किया। सामंती बर्बर चरित्र कायम रहते ही पाकिस्तान में प्रजातंत्र बिल्कुल भी टिक नहीं पाया। मौहम्मद अली जिन्ना की मौत के बाद तत्कालीन पाक प्रधानमंत्री लियाकत अली का कत्ल किया गया और फिर उनके उत्तराधिकारी सिकंदर मिर्जा का तख्ता पलट कर फौजी जरनल अयूबखान द्वारा पाक राजसत्ता हथिया ली गई। पाकिस्तान में विगत 64 साल के अधिकतर काल में राजसत्ता पर फौज का आधिपत्य कायम रहा। पाकिस्तान में प्रगतिशील प्रजातांत्रिक ताकतें सदैव कमजोर बनी रही। जब कभी प्रजातांत्रिक शक्तियां हुकूमत पर काबिज हुई, तब भी पाकिस्तानी राजसत्ता में फौज के वर्चस्व को निर्णायक चुनौती पेश नहीं कर सकी। अफगानिस्तान में 10 वर्षों तक जारी रही जेहाद बनाम कम्युनिस्ट जंग के दौरान अमेरिका से प्राप्त हुई अपार अकूत दौलत और हथियारों के बलबूते पर पाक फौज और उसके तहत काम करने वाली खुफिया ऐजेंसी बेहद ताकतवर होकर उभरी। इसी जबरदस्त ताकत का इस्तेमाल अफगानिस्तान को तालीबान के माध्यम से हथियाने में और कश्मीर में जेहादी जंग को जारी रखने के लिए किया गया।

पाकिस्तान में दुर्भाग्यवश आज भी राजसत्ता की असल शक्ति फौज के पास ही निहित है। तभी तो अपने आका अमेरिका को एक दशक से बाकायदा धोखा देते हुए फौजी इलाके एबटाबाद में आईएसआई ने अमेरिका सबसे अहम दुश्मन ओसामा बिनलादेन को छुपाए रखा। सीआईए के अफसर इस तथ्य को बखूबी जानते थे, इसी कारणवश ऑपरेशन-ओसामा अंजाम देते हुए पाक हुकूमत को विश्वास में नहीं लिया गया। जेहादी आतंकवादियों की पुशतपनाही करने वाली आईएसआई एक निरंकुश शक्ति बनकर पाकिस्तान में स्थापित हो चुकी है, जिस पर कि पाकिस्तान की प्रजातांत्रिक ताकतें हुकूमत का कतई तौर पर नियंत्रण कायम नहीं है। प्रजातांत्रिक हुकूमत ने आईएसआई को पाक प्रधानमंत्री के प्रति जवाबदेह बनाने की कोशिश अंजाम दी थी किंतु यह कोशिश पूर्णतः विफल रही। आईएसआई की जवाबदेही पाक के फौजी कमांडर इन चीफ के प्रति कायम है। पाकिस्तानी फौज वस्तुतः राजसत्ता के अंदर ही एक स्वयंभू शक्ति के तौर पर कायम रही है जो जब चाहे प्रजातांत्रिक शक्तियों का तख्ता पलट कर देती है। यह तथ्यात्मक है कि पाकिस्तान में कट्टर मजहबी सामंतशाही और प्रगतिशील प्रजातांत्रिक ताकतों के मध्य संघर्ष जारी है, किंतु पाकिस्तानी राजसत्ता पर असल

कब्जा कट्टर मजहबी तत्वों का ही है। यही कारण है कि पाकिस्तान की सरजमीन का इस्तेमाल अलकायदा, लश्करएतैयबा, जैशएमौहम्मद, हरकतउल मुजाहिदीन सरीखी जेहादी आतंकवादी तंजीमे खुलकर कर रही हैं। पाकिस्तानी राजसत्ता के आतंकवादी चरित्र को समझते हुए, अमेरिका को दुनिया के साथ मिलकर उसे तत्काल एक आतंकवादी देश घोषित करने की पहल अंजाम देनी चाहिए।

पूर्व प्रशासनिक अधिकारी